SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: Has this problem been rooted out from this country?

MR. CHAIRMAN: Do you want to say somthing?

KUMARI SELJA: Sir, the problem has not been rooted out.इसमें बात यह है कि यह कि यह स्कीम अब स्टेट्स को ट्रांसफर हो गई है क्यों कि जमीन स्टेट्स को देनी है, जो वहां के पैरामीटर्स हैं, वे सारे उनको फुल फिल करने हैं। इसलिए प्लानिंग कमीशन ने यह फैसला लिया है कि अब यह जमीन स्टेट सेक्टर को ट्रांसफर कर दी जाए। ...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया : सभापति महोदय, दिल्ली के मसले में, दिल्ली राज्य कहता है कि हम जमीन दे नहीं सकते हैं। यहां तो जमीन सैट्रल गवर्नमेंट देती है, डी.डी.ए. की जमीन दी जाती है। ....(**व्यवधान**)..... उसके बारे में क्या है? ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : एक मिनट, एक मिनट। ...(**व्यवधान**)... माननीय मंत्री महोदय, आप इस सारी समस्याओं को देख ले, कुछ हो सकता है तो करें।

Promotion of Vedic and Sakskrit studies

*263. SHRI RAJ NATH SINGH: Will the Minister of HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT be pleased to state:

(a) whether Government have any plan to promote Vedic and Sanskrit studies at the All-India level;

(b) if so, whether Government have earmarked any special funds for this purpose; and

(c) if not, the reasons therefor?

THE MINISTER OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (SHRI ARJUN SINGH): (a) to (c) A Statement is 'aid on the Table of the Sabha.

Statement

(a) to (c) A Central Plan Scheme for the Development of Sanskrit Education is being implemented by this Department. Besides, the following four institutions for the propagation of Vedic and Sanskrit studies have also been set up by this Ministry:—

1. Rashtriy Sanskrit Sansthan, New Delhi.
2. Maharshi Sandipani Rashtriya Veda Vidya Prathisthan, Ujjain
3. Shri Lai Bahadur Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha, New Delhi.
4. Raifitriya Sanskrit Vidyapeeth, Tirupati.

The Government of India gives financial assistance to two organisations, namely the Rashtriya Sanskrit Sansthan and Maharshi Sandipani Rashtriya Veda Vidya Prathisthan. The Details of grants released to these institutions/ organizations and the Central Plan Scheme for the Development of Sanskrit Education during 2004-2005 are as follows:

(Rs. in lakh)

	Plan	Non-Plan
Rashtriya Sanskrit Sansthan, New Delhi.	1462.50	1200.00
Maharshi Sandipani Rashtriya Veda Vidya Prathisthan, Ujjain	62.50	Nil
Central Plan Scheme for Development of Sanskrit Education	298.60	Nil

The two remaining organistions (Shri Lal Bahadur Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha, New Delhi and Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth, Tirupati) are assisted by the UGC and the total assistance released to these organisations during 2004-05 is as follows:

(Rs. in lakh)

	Plan	Non-Plan
Shri Lal Bahadur Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha, New Delhi.	7.35	548.18
Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth, Tirupati.	105.32	882.20

In addition, the UGC provides development grants to the following three eligible Sanskrit Universities for the promotion of Sanskrit Studies and Vhe total assistance released to these organizations during 2003-04 is as follows:

(Rs. in lakh)

	Plan
1. K.S. Darbhangha Sanskrit University, Darbhangha	6.49
2. Shri Jagannath Sanskrit Vidyapeeth, Puri	10.69
3. Sampurnanand Sanskrit Viswavidyalaya, Varanasi	36.36

Besides, the UGC also provides development grants to Universities having Sanskrit Departments.

श्री राजनाथ सिंह : सभापति महोदय, मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं, जो मैंने प्रश्न पूछा है, प्रश्न का आधार केवल सामाजिक और सांस्कृतिक आधार ही नहीं रहा है, बल्की हमारा प्रश्न पूछने का आधार, पूरी तरह से आर्थिक और व्यावसायिक रहा है। माननीय मंत्री जी को इस बात की जानकारी होगी कि केवल भारत के ही नहीं, बल्कि दुनिया के जाने-माने भाषिविद् और कम्प्यूटर सांइटिस्ट यह मानने लगे हैं कि कम्प्यूटर की एफिशिएंसी के लिए यदि कोई भाषा सबसे अच्छी हो सकती है, टेक्निकल भाषा कोई हो सकती है तो वह संस्कृत हो सकती है। माननीय मंत्री जी को यह जानकारी भी होगी कि चाहे अर्थमेटिक्स हो, एलजेब्रा हो अथवा ज्योमेट्री हो, इन सरी चीजों को वैदिक साईंस के माध्यम से, वैदिक मैथेमेटिक्स के माध्यम से सिम्पिलीफाई किया जा सकता है। ....(**व्यवधान**).... मैं उस पर भी आ रहा हूं, शायद मंत्री जी को इस बात की भी जानकारी होगी कि जब यूनिवर्सिटी ऑफ बी.सी.सी.पी. ने हल्दी का पेटेंट लिया था, तो उस समय जब हमने डब्लू.टी.ओ. के सामने रिप्रजेंट किया था ...(**व्यवधान**)....

श्री सभापति : आप क्वेश्चन करिए, क्वेश्चन करिए। ....(**व्यवधान**)....

श्री राजनाथ सिंह : मैं क्वेश्चन पर ही आ रहा हूं। ये क्यों परेशान हो रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : आप क्वेश्चन करिए। आप बस क्वेश्चन कर लीजिए।.

श्री राजनाथ सिंह : महोदय, मैं यही कह रहा था कि माननीय मंत्री जी को इस बात की जानकारी होगी कि अमेरिका की एक यूनिवर्सिटी ऑफ मिसिसीपी ने 1995 में हल्दी का पेटेंट किया था, हमने 1997 में ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : आप क्वेशचन कर लीजिए ।

श्री राजनाथ सिंह : महोदय, यह महत्वपूर्ण क्वेश्चन है, प्लीज। हमने 1997 में पेटेंट से मुक्ति दिलाई। पेटेंट से मुक्ति दिलाने के लिए हमने संस्कृत साहित्य से निकालकर तर्क दिया था तब जाकर, जो हल्दी पर अमेरिका का पेटेंट था, उससे मुक्ति मिल पाई थी। इसलिए मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि संस्कृत और वैदिक विज्ञान के इस महत्व को समझते हुए, संस्कृत के अध्ययन और विज्ञान के अध्ययन को प्रोत्साहित करने के लिए क्या आपके पास कोई फ्यूचर एक्शन प्लान है, यदि है तो वह एक्शन प्लान क्या है? यदि नहीं है तो क्या ऐसा कोई फ्यूचर एक्शन प्लान लगाने के ऊपर कोई विचार करेंगे?

श्री सभापति : बस ठीक है, ठीक है।

श्री अर्जन सिंह : माननीय सभापति महोदय, मैंने आपको अपनी स्टेटमेंट में पूरे विस्तार से, यह जानकारी दी है। इससे यह स्पष्ट होगा को संस्कृत के बारे में हर प्रकार से प्रोत्साहित करने का कार्यक्रम है। यदि आप कोई विशेष तरह से बताने की कृपा करेंगे, जिससे आप समझते हैं कि हम इसे और अच्छी तरह से कर सकते हैं तो मैं आपके इन विचारों को सुनकर बहुत प्रसन्न हूंगा और

कोशिश करूंगा, लेकिन यह कहना कि हम कुछ भी नहीं कर रहे हैं और इसके ऊपर कोई अलग से जानकारी लाई जाए...

श्री राजनाथ सिंह : यह मैंने नहीं कहा कि कुछ नहीं कर रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : आप क्वेश्चन करिए, दूसरों को मत देखिए।

श्री राजनाथ सिंह : महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि उन्होंने यह कहा कि भारत सरकार संस्कृत शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए बहुत कुछ कर रही है, लेकिन जो भी आपने उत्तर दिया है, उसमें राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान को पूरे एक वर्ष में चौदह करोड़ रुपए, दूसरे संस्थान उज्जैन को बासठ और तीसरे संस्थान को सात लाख, एक करोड़, छः लाख, दस लाख, छत्तीस लाख रुपया, संस्कृत भाषा के प्रोत्साहन के लिए, भिन्न-भिन्न संस्थानों को दिया जा रहा है।

कैसे संस्कृत भाषा का विकास हो पाएगा, कैसे संस्कृत भाषा को प्रोत्साहन मिल पाएगा ? इसलिए मंत्री जी, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इसके लिए पर्याप्त धनराशि मुहैया कराई जानी चाहिए। संस्कृत को कैसे व्यापक बनाया जा सकता है, संस्कृत भाषा के प्रति कैसे जनसामान्य में आकर्षण पैदा किया जा सकता है, इसके बारे में क्या भारत सरकार विचार कर रही है?

श्री अर्जुन सिंह : सभापति महोदय, संस्कृत के प्रचार का केवल यही तरीका नहीं है। देश की 91 यूनिवर्सिटीज में बी.ए.में संस्कृत एक विषय के रुप में पढाई जा रही है और उनको यू.जी.सी. से असिस्टेंस भी दी जा रही है 509 Simple Sanskrit speaking centresके द्वारा युनिवर्सिटीज और कालेजों में संस्कृत की शिक्षा दी जा रही है। इन केन्द्रों को भी यू.जी.सी. द्वारा सहायता दी जा रही है। इसका और विस्तार करने के बारे में आपका कोई विशेष सुझाव हो तो मैं जरूर उस पर विचार करुंगा।

श्री कलराज मिश्र : संपूर्णानन्द विश्वविद्यालय को ज्यादा सहायता देनी चाहिए ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : ठीक है, ठीक है, द्विजेन्द्र नाथ शर्म जी, आप पूछिए।

श्री कलराज मिश्र : इसे बहुत कम सहायता दी गई है, उनको उचित सहायता देनी चाहिए ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : आप बैठिए, आपका क्वेश्चन नहीं है, इनका क्वेश्चन है। आप इसके बारे में मंत्री जी से अलग से बात कर लीजिएगा।

SHRI DWIJENDRANATH SHARMAH: Sir, the hon. Minister has given a very detailed reply about Sanskrit studies. Now, so far as my experience goes, I have seen that in my own State there are hundreds of Sanskrit colleges and institutes and the conditions of those institutions are very

deplorable today. May I know from the hon. Minister whether the Government has any plan for improving the conditions of these institutes so that the age-old Sanskrit studies can continue amongst our people?

SHRI ARJUN SINGH: Sir, if the hon. Member is kind enough to let me know about any such institution which needs this kind of support, we will try to do whatever is possible.

श्री एस.एस अहलुवालिया : सभापति महोदय, भारत वह राष्ट्र है, जिसने आर्यभट्ट के माध्यम से algebra के 13 फारमूले सारे विश्व को दिए, छठी शताब्दी में शून्य का कंसेप्ट दिया और आज हमें लीलावती का हिन्दी में अनुवाद या रीजनल भाषाओं में अनुवाद उपलब्ध नहीं है। हम उसे खरीदने जाएं तो हालैंड प्रैस की प्रतिलिपि हमें मिलती है। आर्यभट्ट एक बहुत बड़े खगोलशास्त्री हुए हैं **...(व्यवधान)...** आपको तो नहीं समझ आएगा कि कौन है। you should be ...(Interruptions)...

श्री सभापति : आप बोलते जाइए, दूसरों को मत देखिए।

श्री एस.एस अहलुवालिया : ये बोल रहे हैं कि वह कौन है।

श्री सभापति: नहीं, नहीं, आप छोडिए उसे।

श्री एस.एस अहलुवालिया : यही तो बात है कि ये मार्क्स और लेनिन को याद रखेंगे, लेकिन आर्यभट्ट को याद नहीं रखेंगे। यही कारण है कि हम अपने पूर्व पुरुषों को, अपनी धरोहर को भूल जाते हैं, तो उन्हें याद करने के समय, सदन में सवाल उठाते वक्त, ये पूछते है कि वह कौन है?

श्री सभापति : ये सवाल इसलिए उठाते हैं ताकि आप अपने असली सवाल से हट जाएं।

श्री एस.एस अहलुवालिया: वह हटाना चाहते हैं हमें, सवाल से हटाना चाहते हैं।

श्री सभापति : ठीक है, आप बोलिए।

श्री एस.एस अहलुवालिया: सभापति महोदय, मैं मंत्री महोदय से जानना चाहूंगा कि calculus और astronomy जो हमारे देश में साइंस ग्रेजुएटस को पढाई जाती है, उसकी तरह क्या आर्यभट्ट का जो खगोल शास्त्र है, उसे पढाने की परंपरा शुरु करेंगे? लीलावती को और आर्यभट्ट का जो काम है, उसे हमारी रीजनल भाषाओं में उपलब्ध कराने की कृपा करेंगे?

श्री अर्जुन सिंह : माननीय सभापति महोदय, आपने कृपा की जो माननीय सदस्य को यह **...(व्यवधान)...**

श्री एस.एस अहलुवालिया : सभापति महोदय, फिर कमेंट हो रहे हैं कि लीलावती कौन थी? लीलावती एक ऐसा फारमूला है, जिससे सुपर कंप्यूटर बनता है **....(व्यवधान)....** जब मैं सदन में आया था, तो मैंने संस्कृत में शपथ ली थी, आप लोगों ने नहीं ली थी **...(व्यवधान)...**

श्री दीपांकर मुखर्जी : 6 साल तक भूल गए, अब क्यों याद आया है?

श्री सभापति : याद इसलिए आया कि लीलावती फारमूला है...(**व्यवधान**)... एक मिनट बैठ जाइए, जवाब देने दीजिए ...(**व्यवधान**)... आप इन्हें जवाब देने दिजिए, क्या बात कर रहे हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस अहलुवालिया :लीलावती कौन है, वह नहीं मालूम, आर्यभट्ट कौन है, वह नहीं मालूम ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : माननीय सदस्य, आप जवाब सुनना चाहते हैं या नहीं ...(**व्यवधान**)... आप जवाब सुनना चाहते हैं या नहीं ...(व्यवधान)... ठीक है, आप बैठिए, आप बैठिए ...(व्यवधान)... बोलिए ... (**व्यवधान**)... आप बोलने दीजिए? ...(**व्यवधान**)... आप इनको बोलने दीजिए, जवाब देने दीजिए ...(**व्यवधान**)...

श्री दीपांकर मुखर्जी : हम भूल जाते हैं कि ये कौन से अहलुवालिया हैं। इधर भी अहलुवालिया थे उधर भी अहलुवालिया हैं। जब वे इधर थे तो इन्हें आर्यभट्ट, लीलावती याद नहीं आए। इतने सालों से याद नहीं आए, अब याद आ रहे हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस अहलुवालिया : सर, मैं सदन का ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूं कि अमेरिका के नासा में संस्कृत और वैदिक टेक्नॉलोजी पर डिसकसन होता है और पढाए जाते हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : ठीक है, बोलिए Please take your seat. (*Interruptions)* Let the Minister reply. *(Interruptions)*

श्री अर्जुन सिंह : आदरणीय सभापति महोदय, मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि भारतीय परंपराओं मे जो ज्ञान का भंडार है, उन सबको विकसित करने का, उन पर ध्यान केन्द्रित करने का और आधुनिक संदर्भ में उनसे जो कुछ भी संभव है, ज्ञान अर्जन करने का कोई भी अवसर मंत्रालय के द्वारा नहीं छोड़ा जाएगा। लेकिन यह बात सही है कि आर्यभट्ट और मार्क्स में कोई कंपीटिशन भी नहीं है ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : आप बोलने दीजिए, वे समझा देंगे, आप क्यों जबर्दस्ती कर रहे हैं, वे खुद ही बोल रहे हैं।

श्री अर्जुन सिंह : और इस विषय पर मैं समझता हूं कि डिबेट के बजाय एक ऐसे लेवल पर डिसकसन होना चाहिए, जहां हम ऐसे बिन्दुओं को सामने ला सकें और फिर उस पर हम कदम उठांए और काम करें, तो वह सार्थक होगा। उसके बारे में डिबेट करके कि यह सही है, गलत है, अच्छा है, बुरा है, कितनी दूर तक है, हम इसमें नहीं जा सकते। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : एक मिनट...(**व्यवधान**)... एक मिनट, ठहरिए...(**व्यवधान**)...सरदार जी, बैठिए ...(**व्यवधान**)... अहलुवालिया जी, आप बैठ जाइए ...(**व्यवधान**)... यह मत कीजिए। मैं आपसे इतना ही निवेदन करना चाहूंगा कि जिन-जिन माननीय सदस्यों की इस प्रकार की क्षमता है,उन्हें बुला कर आप बात करें ...(**व्यवधान**)... आपको भी बुलाएंगे, मार्क्स का नाम आ गया, इसलिए ...(**व्यवधान**)...Now, Question No. 264. *(Interruptions)*

डा. मुरली मनोहर जोशी : सभापति महोदय, ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : आपको भी बुला लेंगे, अब क्वेश्चन को छोडिए। बहुत हो गया। ...(**व्यवधान**)... मैं एलाऊ नहीं कर रहा हूं।

डा. मुरली मनोहर जोशी : सभापति जी, आप एलाऊ नहीं कर रहे हैं, लेकिन संस्कृत के विषय में सदन में तो चर्चा होनी चाहिए।

श्री सभापति : जोशी जी, आप संस्कृत के विषय में बहुत जानते हैं। आप मंत्री रहे हैं, इसलिए और भी जानते हैं, लेकिन जैसा उन्होंने कहा, मैं समझता हूं कि सबको बैठ कर इस पर चर्चा कर लेनी चाहिए ...(**व्यवधान**)...

डा.मुरली मनोहर जोशी : सभापति जी, मुझे स्पष्ट आश्वासन चाहिए ...

श्री सभापति : इन्होनें आश्वासन दे दिया।

डा.मुरली मनोहर जोशी : कि इस सबंध में सरकार कि ठोस योजना और उसमें आमंत्रित सदस्यों की सूची आपके पास पड़े हुए हैं कि नही, क्योंकि हमारा अनुभव इस मामले में बहुत खराब है। वे उसमें भाजपा को नहीं बुलाते।

श्री सभापति : जोशी जी, माफ करें। इस विषय पर मंत्री महोदय ने जो जवाब दिया है, उससे हर व्यक्ति को संतुष्ट होना चाहिए कि इस प्रकार के प्रश्नों पर बैठ कर चर्चा होगी, डिबेट से कोई फायदा नहीं होगा। वे चर्चा करने को तैयार हैं। मैं इनसे निवेदन करुंगा को आपको भी बुला लें और बाकी लोगों को भी बुला लें ...(**व्यवधान**)... ठीक है ...(**व्यवधान**)...

श्री दीपांकर मुखर्जी : सर, नाईटशेल्टर पर भी डिसकसन करांए, नाईट शेल्टर पर भी डिसकसन कराएं।

श्री सभापति : हां, कहीं भी करा लीजिए।

श्री अर्जुन सिंह : सबसे पहले इन्हीं को बुलाएंगे।